

विचार बिन्दु

सत्य से कीर्ति प्राप्त की जाती है और सहयोग से मिश्र बनाए जाते हैं। -कौटिल्य अर्थशास्त्र

जब भी भूख से लड़ने कोई खड़ा हो जाता है, सुंदर दीखने लग जाता है!

जै

से-जैसे साल का यह समय नज़दीक आता है, मेरा दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता है। कुछ-कुछ वैसी ही हालत होती है जैसी परीक्षा परीक्षा आने के ठीक पहले हुआ की थी। इस साथ से यह खूब पढ़ाई ही हो और पर्सें बहुत अच्छे हैं, इसलिए इस बार यह से हमारा कालास की ठीक करना पक्का है। लैंकिन जब परीक्षा परीक्षण आता तो हमारे सारे दोस्रे कुप्सा हो जाते हैं। इसके बाद शुरू होता परीक्षकों को कोसने का सिलसिला। आजकल मास्टर लोग कौपियां दिंग से जोंकते ही कहाँ हैं? बहुत समझ है कि जिस दिन वे हमारी कौपियां जांच रहे थे उस दिन उनकी अपेक्षा घर बातों से लड़ाई हो गई हो और साथ याहां पर निकाल दिया हो। और ऐसी ही अनेक लैंके लैंकों के बाबत अब क्यों कर रहा है?

हाल में कंसन ने एक सालाह परीक्षा बैल फैंडर बांग्रे और परीक्षण के अंग्रेजी अकादमिक संस्थान इंटीटीयूट फॉर इंस्ट्रेनेशन लॉ ऑफ़ पीजी एड आईएफ़ कॉम्प्लिक (IFHV) द्वारा एक सुविचारित प्रक्रिया के तहत तैयार की गई वैश्विक भूख सूचकांक रिपोर्ट (ग्लोबल हंगर इंडेक्स-जॉन्यूरियाई) में जब यह बताया गया कि कुल 127 देशों की सूची में भारत का स्थान 105वां है, तो उपरांक प्रसंग अन्याय याद आ गया। जब भी ऐसा कोई सर्वेक्षण या शोध या अध्ययन होता है और उसमें हमारा देश पिछड़ा हुआ याहां जाता है। अगर सरकार बतायेंगे कि एक साथ देखें तो लगता है जैसे सारी दुनिया हमारे विश्व भूख यूनियन करने और हमें नीचा दिखाने में जुटी हुई है। हाँ, जब किसी सर्वेक्षण में या अन्यथा भी हमारी वाहाही होती है तो हम ऐसा करने वालों की सराहना करते नहीं थकते हैं। मुझे यह बताये रुचक लगती है कि हमारी सरकार के कामकाज कहते ही थकते हैं उनके नेता में पूरी दुनिया देशों के देश का ढंका बज रहा है, लैंकिन वे यह नहीं बताते हैं कि उनी पूरी दुनिया से हमारी छाँकों को धूमधार सूचकांक प्राप्त करने और यह मानव स्वभाव ही है जिसे हमारे लोक में मीठा-मीठा गप्प और कड़वा-कड़वा थूका जाता है।

ग्लोबल हंगर इंडेक्स सन् 2006 से निर्धारित रूप से जारी होता है और अनेक 19वें साल की इस 2024 की पिरोटे में उनके कुल 136 देशों के डेटा का अध्ययन किया है। इस डेटा के अध्ययन के बाद इन संस्थाओं ने पाया कि इसमें 127 देशों का स्थान 202 तक के डेटा इनमें भूकम्पिल है कि उनके आधार पर इकाई वैश्विक भूख सूचकांक प्राप्त किया जा सकता है। शेष 9 देशों के पर्याप्त डेटा उपलब्ध नहीं थे, इसलिए उन्हें छोड़ दिया गया। यह सूचकांक प्राप्त करने के लिए जो डेटा उपलब्ध किया गया उसकी विश्वसीयता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि वह संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रकाशित खोलों से लिया गया है। ये खोलों हैं संयुक्त राष्ट्र संघ का खाद्य पृष्ठ संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनीसेफ़, और संयुक्त राष्ट्र का बाल मन्त्रीय संगठन के अंतर्गत सम्पादित रहते हैं। इनके अलावा विश्व बैंक और जनसांख्यिकी और स्वास्थ्य सर्वेक्षण कार्यक्रम भी इसमें शामिल रहे।

यह सूचकांक चार मुख्य संकेतकों को मिलाकर बैंकर किए गए एक फॉर्मूला के आधार पर भूख की बहु आयामी प्रक्रिया की पड़ताल करता है। ये चार मुख्य संकेतक हैं अल्पव्योग अर्थात अपर्याप्त कैलोरी प्राप्त करने के लिए सारकों को नियमित रूप से जारी होता है और अनेक 19वें साल की इस

इस साल के सूचकांक में एक बहुत महत्व की बात यह है कि सारी दुनिया के लिए वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे मॉर्डेरेट अर्थात मध्यम भूख वाला माना जाता है। मतलब यह कि औसतन 50 हजार करोड़ बहुत थोड़ा ही बेहतर कर सके हैं।

पूरी दुनिया ही भूख के लिहाज से संतोषजनक हालत में नहीं है। हम इस बात से बहुत खुश नहीं हो सकते कि 2016 की तुलना में, जब यह स्कोर 18.6 था, हम बहुत थोड़ा ही बेहतर कर सके हैं।

बहुत थोड़ा ही बेहतर कर सके हैं।

बिन्दु (गम्भीर भूख) प्राप्त कर 105 वें स्थान पर है। इस गम्भीर भूख वर्ग में दुनिया की 42 देश सामिल हैं। यहीं यह बात भी और तलब है कि इस सूचकांक के अनुमान इनमें से अन्यायी है। सन 2000 में हमारे पास 38.4, 2008 में 35.2 और 2016 में 29.3 बिंदु थे। इस सूचकांक के अनुमान भारत की 13.7 प्रतिशत आवादी कुपोषित है। इसमें से पांच वर्ष से कम आयु के 35.5 प्रतिशत बच्चों की लम्बाई कम है, 18.7 प्रतिशत बच्चे कमज़ोर हैं और 2.9 प्रतिशत बच्चे अपेक्षांकी वर्षों जें जन्म दिन से पहले ही यह दुनिया छोड़ जाते हैं।

यह चर्चा बैंकों हो गी कि इस सूचकांक में कौन-कौन से देश हमारे बेहतर और कौन कौन से देश बदल रहा है। हालांकि समाचार माध्यमों में इस तरह से भी चर्चा होती रहती है। अरे, वह देश तो हमसे भी ज्यादा बुरी स्थिति में है, फिर उसका स्कोर हमसे बेहतर करेंगे हैं? जरूर इस अकलन में कोई गड़बड़ हुई है।

इसकी बायां में एक अन्य काम पर बाहर आने के लिए वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे मॉर्डेरेट अर्थात मध्यम भूख वाला माना जाता है। मतलब यह कि वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे मॉर्डेरेट अर्थात मध्यम भूख वाली से लिया गया है। यह सूचकांक के संचाकांक में एक बहुत थोड़ा ही बेहतर कर सके हैं। इस सूचकांक में बहुत व्यक्ति के साथ यह बात कही गई है कि सन 2030 की संरेख्यों में यह बात अपेक्षांकी वर्षों जें जन्म दिन से देश बदल रही है। यहीं यह बात भी और तलब है कि इस सूचकांक के अनुमान इनमें से कमी प्रदर्शित हो जाए। अरे, वह देश तो हमसे भी ज्यादा बुरी स्थिति में है, फिर उसका स्कोर हमसे बेहतर करेंगे हैं? जरूर इस अकलन में कोई गड़बड़ हुई है।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं। इस सूचकांक में बहुत व्यक्ति के साथ करने के लिए वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे मॉर्डेरेट अर्थात मध्यम भूख वाली माना जाता है। मतलब यह कि वैश्विक भूख सूचकांक 18.3 है, जिसे मॉर्डेरेट अर्थात मध्यम भूख वाली माना जाता है।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

बिन्दु (गम्भीर भूख) प्राप्त कर 105 वें स्थान पर है। इस गम्भीर भूख वर्ग में दुनिया की 42 देश सामिल हैं। यहीं यह बात भी और तलब है कि इस सूचकांक के अनुमान इनमें से अन्यायी है। सन 2000 में हमारे पास 38.4, 2008 में 35.2 और 2016 में 29.3 बिंदु थे। इस सूचकांक के अनुमान भारत की 13.7 प्रतिशत आवादी कुपोषित है। इसमें से पांच वर्ष से कम आयु के 35.5 प्रतिशत बच्चों की लम्बाई कम है, 18.7 प्रतिशत बच्चे कमज़ोर हैं और 2.9 प्रतिशत बच्चे अपेक्षांकी वर्षों जें जन्म दिन से पहले ही यह दुनिया छोड़ जाते हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं। हालांकि समाचार माध्यमों में इस तरह से भी चर्चा होती रहती है। अरे, वह देश तो हमसे भी ज्यादा बुरी स्थिति में है, फिर उसका स्कोर हमसे बेहतर करेंगे हैं? जरूर इस अकलन में कोई गड़बड़ हुई है।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।

यह चर्चा बैंकों में एक अन्य काम पर बाहर कर सके हैं।